साथ-साथ पढ़ें

निर्मल जीत सिंह सेखों

सरदार त्रिलोक सिंह सेखों एवं हरबंस कौर के पुत्र निर्मल जीत सिंह सेखों का जन्म 17 जुलाई 1945 को हुआ था। उनका गाँव इसवाल पंजाब के लुधियाना के समीप हलवारा एयरफोर्स स्टेशन के पास था। संभवतः इसीलिए वे बचपन से ही वायुयान के प्रति आकर्षित रहे। 19वीं शताब्दी की शुरुआत के एक प्रसिद्ध योद्धा हरी सिंह नलवा की कहानियों के प्रति उनकी विशेष अनुरक्ति थी। यही नहीं, वे अपने पिता से भी बेहद प्रभावित थे, जिन्होंने भारतीय वायुसेना में अपनी सेवाएँ दी थीं। आसमान से जुड़ी रोमांचक और प्रेरक कहानियों को बेहद उत्साहपूर्वक सुनने वाले निर्मल जीत सिंह ने एक दिन खुद को भी भारतीय वायुसेना से जोड़ने का सपना देखा था। उन्होंने लड़ाकू विमान चालक बनने का दृढ़ निश्चय बचपन में ही कर लिया था।

निर्मल जीत ने लुधियाना के समीप अजितसर मोहे में स्थित खालसा हाई स्कूल से अपनी शिक्षा प्राप्त की तथा मैट्रिक की परीक्षा में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण हुए। उन्होंने सन् 1962 में दयालबाग इंजीनियरिंग कॉलेज आगरा में दाखिला लिया। 'नेशनल कैडेट कोर' (एन. सी.सी.) में कैडेट रहते हुए, निर्मल जीत ने एरो-मॉडलिंग में अपनी गहरी रुचि प्रदर्शित की। हालाँकि 1965 के युद्ध के बाद उन्होंने भारतीय वायुसेना में शामिल होने के अपने सपने को साकार करने के लिए बीच में ही इंजीनियरिंग की पढ़ाई छोड़ दी।

अनेक बाधाओं के बावजूद निर्मल जीत सिंह सेखों की आकांक्षा जल्द ही पूरी हो गई। 4 जून 1967 को उन्हें भारतीय वायुसेना में नियुक्ति मिल गई। चूँकि वे बहुत लंबी कद-काठी के थे, इसलिए उनके लिए छोटे लड़ाकू विमान 'नैट' में बैठना असहज था। हालाँकि जल्द ही वे इन लड़ाकू विमानों 'नैट्स' को उड़ाने में सिद्धहस्त हो गए। अपने उदार एवं मैत्रीपूर्ण स्वभाव के लिए पहचाने जाने वाले निर्मल जीत सिंह को सभी प्यार से 'भाई' कहकर पुकारते थे। अक्टूबर 1968 में वे फ्लाइंग ऑफिसर के रूप में 'फ्लाइंग बुलेट्स' कही जाने वाली संख्या 18 स्क्वाड्रन में शामिल हो गए।

आसमान की सुरक्षा

1971 में पाकिस्तान ने भारत के उत्तर-पश्चिमी भागों में हवाई हमले द्वारा युद्ध छेड़ दिया। कई हवाई क्षेत्र पाकिस्तानी वायुसेना के हवाई हमलों के शिकार हो गए। भारत, श्रीनगर में हवाई सुरक्षा के लिए किसी एयरक्राफ्ट को नहीं रख सकता था, क्योंकि इस संबंध में 1948 में एक अंतरराष्ट्रीय समझौता हुआ था। लेकिन युद्ध के कारण कश्मीर घाटी की सुरक्षा के लिए श्रीनगर में नैट स्क्वाड्रन टुकड़ी को रखा गया था। ऐसी चुनौतीपूर्ण परिस्थिति में निर्मल जीत सिंह सेखों इस टुकड़ी में शामिल हुए। उन्होंने जल्द ही अपने को भयानक ठंड के अनुकूल ढाल लिया और निर्भीकतापूर्वक पाकिस्तानी वायुसेना को मुँहतोड़ जवाब दिया।

14 दिसंबर को पेशावर हवाई अड्डे से उड़ान भरने वाले पाकिस्तानी वायुसेना के एफ-86 सेबर जेट फाइटर ने श्रीनगर हवाई क्षेत्र पर हमला शुरू कर दिया। फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों उस वक्त मुस्तैदी के साथ ड्यूटी पर तैनात थे। पाकिस्तानी विमान चालकों द्वारा लगातार किए जा रहे हमलों ने सेखों को अपनी असाधारण वीरता प्रदर्शित करने का अवसर दिया। अपनी जान की परवाह किए बगैर वे नैट एयरक्राफ्ट लेकर उड़ पड़े। प्रारंभ से ही दिखाई दे रहा था कि परिस्थितियाँ उनके अनुकूल नहीं हैं। लेकिन इस विषम परिस्थिति में भी वे असफल नहीं हुए और उन्होंने दुश्मन को आसमान में ही एक भयंकर युद्ध में घेरना शुरू कर दिया।

अपने नैट एयरक्राफ्ट का कुशलतापूर्वक संचालन करते हुए, निर्मल जीत सिंह सेखों ने छह पाकिस्तानी सेबर फाइटर एयरक्राफ्ट को मार्ग में रोक दिया। उन्होंने इन लड़ाकू विमानों पर आक्रमण किया तथा ज्यादातर को नष्ट कर दिया। अपने फौलादी संकल्प के बारे में 'कॉम्बेट एयर पैट्रॉल' (सी.ए.पी.) कंट्रोल रूम को बताते हुए उन्होंने कहा, "मैं दो सेबर फाइटर एयरक्राफ्ट के पीछे लगा हूँ। मैं उन्हें भागने नहीं दूँगा।" सेखों भले ही भयानक परिस्थितियों में लड़ रहे थे, लेकिन उन्होंने पाकिस्तानी वायुसेना को भारी क्षति पहुँचाई। अपनी योग्यता पर पूर्ण विश्वास रखने वाले निर्मल जीत सिंह ने आकाश में आखिरी दम तक वीरतापूर्वक युद्ध किया। उनके निर्भीक हवाई युद्ध ने शत्रु चालकों के इरादों पर सेंध लगा दी, जिसके कारण वे कश्मीर में कोई विशिष्ट सफलता प्राप्त न कर सके।

फ्लाइंग ऑफिसर सेखों की उम्र मात्र 26 वर्ष थी, जब उन्होंने मातृभूमि की रक्षा करते हुए अपने प्राणों का बलिदान कर दिया था। वे अपने पीछे अपनी पत्नी मनजीत सेखों को छोड़ गए, जिनसे उनका विवाह महज 10 माह पूर्व ही हुआ था (बाद में उनका पुनर्विवाह हो गया)। भारतीय वायुसेना के वे एकमात्र नायक हैं, जिन्हें परम वीर चक्र से सम्मानित किया गया। जो लोग हवाई-युद्ध-कौशल में प्रवीण होना चाहते हैं, उनके लिए फ्लाइंग ऑफिसर सेखों का अभूतपूर्व उड़ान-कौशल तथा विषम से विषम परिस्थितियों में भी किए गए असाधारण कार्य प्रेरणा के स्रोत हैं।

7 अक्टूबर 1982 को भारतीय वायुसेना की पचासवीं वर्षगाँठ पर सेना के डाक विभाग ने फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों के सम्मान में एक विशेष डाक आवरण जारी किया था। सन् 2000 में 50वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर भारत सरकार द्वारा आपके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया गया। पंजाब के लुधियाना जिला न्यायालय के प्रांगण तथा एयरफोर्स म्यूजियम, पालम, नई दिल्ली में नैट एयरक्राफ्ट के साथ इनकी प्रतिमा लगाई गई है। चेतन आनंद द्वारा निर्देशित फिल्म 'हिन्दुस्तान की कसम' (1973), भारतीय वायुसेना के 1971 के युद्ध के गौरवशाली अध्याय पर आधारित है।

स्रोत– वीरगाथा— परम वीर चक्र विजेताओं की कहानियाँ, रा.शै.अ.प्र.प.

एयरफोर्स म्यूजियम, पालम, नई दिल्ली में स्थापित 'नैट एयरक्राफ्ट' के साथ फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों की प्रतिमा

प्रशस्ति पत्र

फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों
(10877), फ्लाइंग ब्रांच (पायलट)

फ्लाइंग ऑफिसर निर्मल जीत सिंह सेखों श्रीनगर में स्थित 'नैट डिटैचमेंट' के पायलट थे, जहाँ उन्हें पाकिस्तानी हवाई हमले से घाटी की रक्षा करनी थी। युद्ध के शुरुआती दौर से ही वे और उनके सहयोगी पाकिस्तानी विमानों द्वारा एक के बाद एक हो रहे तूफानी हमलों का बहादुरी और दृढ़ता से सामना करते हुए नैट एयरक्राफ्ट की उत्तम साख को कायम रखे हुए थे। 14 दिसंबर 1971 को श्रीनगर हवाई पट्टी पर दुश्मन के छह सेबर एयरक्राफ्ट के एक दल द्वारा हमला किया गया था। उस समय फ्लाइंग ऑफिसर सेखों रेडिनेस ड्यूटी पर थे। तत्काल ही दुश्मन के कम से कम 6 लड़ाकू विमान ऊपर मँडराने लगे और हवाई पट्टी पर ताबड़तोड़ बमबारी शुरू कर दी। इस हमले के दौरान जानलेवा खतरे के बावजूद फ्लाइंग ऑफिसर सेखों ने उड़ान भरी और तुरंत ही दो हमलावर सेबर फाइटर एयरक्राफ्ट को युद्ध में उलझा लिया। इस लड़ाई में यह हुआ कि उन्होंने एक एयरक्राफ्ट को मार गिराया तथा दूसरे को आग के हवाले कर दिया। इतने में दूसरे सेबर लड़ाकू विमान संकट में फँसे अपने साथियों की सहायता के लिए आ गए और उन्होंने फिर फ्लाइंग ऑफिसर सेखों के 'नैट एयरक्राफ्ट' को घेर लिया, इस बार एक के पीछे चार थे। हालाँकि बराबरी की टक्कर न होते हुए भी फ्लाइंग ऑफिसर सेखों ने अकेले ही दुश्मनों को पूरी टक्कर दी। इस लड़ाई में जो कि एक वृक्ष जितनी ऊँचाई पर लड़ी जा रही थी, सेखों ने अपनी पूरी वीरता दिखाई, लेकिन अंत में अधिक संख्या ने उन्हें मात दे दी। उनका विमान गिरकर ध्वस्त हो गया और वे वीरगति को प्राप्त हो गए।

ऐसे समय में जब मृत्यु निश्चित थी, फ्लाइंग ऑफिसर सेखों ने सर्वोच्च वीरता, हवाई रण-कौशल और असाधारण संकल्प का परिचय अपने निहित कर्तव्यों से भी ऊपर उठकर देते हुए वायुसेना की परंपराओं को नई ऊँचाइयाँ दीं।

गजट ऑफ इंडिया नोटिफिकेशन
सं. 7-प्रेसी./72